Title: Request to check the facts relating to number of AIDS patients in the country and irregularities in drugs manufactured by M/s Glaxo.

MR. SPEAKER: Chaturvedi ji, he is also raising a health issue.

श्री प्रभुनाथ सिंह : अध्यक्ष महोदय, संयोग से स्वास्थ्य मंत्री जी यहां बैठे हुये हैं। मैं आपके माध्यम से उनसे निवेदन करना चाहता हूं कि एचआईवी ऐड्स संक्रमण विवादास्पद मुद्दा बन चुका है। दुनियाभर के वैज्ञानिक इस मुददे पर एकमत नहीं हैं। कुछ वैज्ञानिक एच.आई.वी. वायरस की दवा के अस्तित्व को मानने के लियेाहमत नहीं हैं। लेकिन भारत जैसे विकासशील देश में इस बीमारी के संक्रमण होने के आंकड़े यू.एन.एस.,यू.एस.ऐड और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी अंतराराट्रीय संस्थाओं द्वारा सुनियोजित ढंग से प्रचारित किया जा रहा है। इस संबंध में जनसत्ता में श्री राम बहादुर राम ने एक लेख निकाला है जिसमें लिखा है कि लाइलाज रोग से फैलता उद्योग। इसमें विवादास्पद आंकड़े बताये गये हैं। प्लानिंग कमीशन के अनुसार इस समय 35-40 लाख लोग पीड़ित हैं। हमारे वर्तमान विदेश सचिव श्री ललित मानसिंह ने 85 लाख रोगी बताये हैं। संसद की स्थायी समिति ने यह संख्या 81 लाख बताई है। इसी तरह सदन में पिछले दिनों मंत्री जी ने जो आंकड़े दिये हैं, वे गुमराह करने वाले हैं। मैं सदन को बताना चाहता हूं कि 1425 करोड़ रुपया विश्व बैंक से अनुदान के रूप में लिया गया है जिसे 30 वर्ो में 28 प्रतिशत सूद सहित वापस देना है। एक विदेशी कम्पनी गलैक्सो ऐड्स की जो दवा बनाती है, ने एक साल 1999 में करीब 3 हजार करोड़ रुपये की दवा बेच दी है जबकि प्रचारित नही थी। अनुमान किया जाता है कि अगले पांच वर्ो में 20 हजार करोड़ रुपये की दवा बिकेगी। यह 20 हजार करोड़ रुपया अगले 30 वर्ाों में ब्याज समेत देना होगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं सदन को बताना चाहता हूं कि एक तरफ 25 हजार करोड़ रुपया लेगी और 1425 करोड़ रुपया अनुदान के रूप में दिया है, उसे देना होगा । यह भारत की अर्थ व्यवस्था को खराब करने की साजिश चल रही है। मेरा माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी से निवेदन है कि मामले की गंभीरता को समझें और वे सदन को बतायें कि इतना बड़ा घपला-घोटाला हुआ है, वे इस पर कार्यवाही कर रहे हैं या नहीं?

MR. SPEAKER: Mr. Minister, would you like to say anything on both these issues?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (डॉ. सी.पी.ठाकुर) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने डायबिटीज का मामला उठाया है, उसमें बहुत सारी कंपनियां इसलिए उसे बंद कर रही हैं कि जो पहले एनीमल बेस्ड इनसुलिन था, उसमें क्या होता है कि थोड़े दिनों के बाद एन्टी बॉडीज बनने लगती है और जिस आदमी को दस यूनिट की आवश्यकता है, उसकी क्षमता 20 यूनिट हो जायेगी, कुछ दिनों के बाद 40 यूनिट तथा 80 यूनिट हो जायेगी। उसे इस तरह से लेना पड़ता है। इसीलिए दुनिया भर में धीरे-धीरे लोगों ने उसे डिस्कार्ड कर दिया और जो आजकल दूसरी मैथड है, उसे लोग अपना रहे हैं। लेकिन फिर भी मैं दिखवा लूंगा कि उसकी कमी नहीं होनी चाहिए।â€¦(व्यवधान)

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी : उसकी कीमत ऐसी हो कि उसे आम आदमी अफोर्ड कर सके। MR.SPEAKER: Shri Chaturvedi, why are disturbing when the Minister is replying?

डा.सी.पी.ठाकुर : माननीय सदस्य ने एड्स के विाय में जो कहा है, इसमें दो मत नहीं है कि एड्स वायरस डिसीज है और यह वायरस के कारण होती है। लेकिन जैसे माननीय सदस्य कह रहे हैं, किसी ने कहा कि एड्स की बीमारी होती ही नहीं है। अफ्रीका में भी वहां के राट्रपति ने कहा कि यह बीमारी अफ्रीका में नहीं है। लेकिन जब इतने लोग मरने लगे तो उन्होंने माना। ग्लैक्सो की बात उन्होंने कही है इसकी हम लोग जांच करायेंगे। â€¦(व्यवधान)

श्री प्रियरंजन दासमुंशी : जो लोग वैजिटेरियन हैं वे लोग एनीमल बेस्ड इंसुलिन कैसे लेंगे, यह भी सोचना चाहिए।

डा.सी.पी.ठाकुर : हम दिखवा लेंगे।

अध्यक्ष महोदय : पहले दासमुंशी जी को देना है।